# समाज का बोध

*कक्षा 11 के लिए पाठ्यपुस्तक*

11107

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

**11107 – समाज का बोध**
कक्षा 11 के लिए पाठ्यपुस्तक

**ISBN 81-7450-614-4**

**प्रथम संस्करण**
*सितंबर 2006 आश्विन 1928*
**पुनर्मुद्रण**
*जनवरी 2007 माघ 1928*
*नवंबर 2007 कार्तिक 1929*
*दिसंबर 2008 पौष 1930*
*जनवरी 2010 माघ 1931*
*नवंबर 2010 कार्तिक 1932*
*जनवरी 2011 माघ 1932*
*अप्रैल 2013 बैसाख 1935*
*अक्तूबर 2014 कार्तिक 1936*
*फ़रवरी 2015 फाल्गुन 1936*
*दिसंबर 2015 अग्रहायण 1937*
*दिसंबर 2016 पौष 1938*
*दिसंबर 2017 अग्रहायण 1939*
*जनवरी 2019 पौष 1940*
*अक्तूबर 2019 अश्विन 1941*
*मार्च 2021 फाल्गुन 1942*
*दिसंबर 2021 अग्रहायण 1943*

**PD 10T RPS**

***© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2006***

**₹ 50.00**

*एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।*

*प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा डी.के. प्रिंटर्स, 5/34, कीर्ति नगर, इंडस्ट्रियल एरिया, नयी दिल्ली – 110 015 द्वारा मुद्रित।*

**सर्वाधिकार सुरक्षित**

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

**एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय**

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
**नयी दिल्ली 110 016** फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
**बेंगलुरु 560 085** फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
**अहमदाबाद 380 014** फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
**कोलकाता 700 114** फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
**गुवाहाटी 781021** फोन : 0361-2674869

**प्रकाशन सहयोग**

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *विपिन दिवान*
संपादक : *नरेश यादव*
उत्पादन सहायक : *ओम प्रकाश*

**आवरण**
*अमित श्रीवास्तव*

# आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना कि वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं

अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच–विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समूह के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन और समाजशास्त्र पाठ्यपुस्तक समिति के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर योगेंद्र सिंह की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान दिया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनीटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों व सुझावों का स्वागत करेगी, जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

*निदेशक*

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
*20 दिसंबर 2005*

# शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए दो शब्द

हमारी प्रारंभिक पाठ्यपुस्तक में हमारा उद्देश्य विद्यार्थियों को समाजशास्त्र का परिचय कराना था। अतः हमने समाज के उद्भव एवं विषय के मुख्य सरोकारों के अध्ययन के लिए इसके उपकरणों एवं पद्धतियों के बारे में चर्चा की। समाज को समझने के अपने प्रयास के तहत समाजशास्त्र का एक मुख्य सरोकार व्यक्ति और समाज के बीच के संबंध को समझना था। व्यक्ति समाज में कोई कार्य करने के लिए किस सीमा तक स्वतंत्र है और किस सीमा तक बाध्य?

इस पुस्तक में हम सामाजिक संरचना, सामाजिक स्तरीकरण एवं सामाजिक प्रक्रियाओं की अवधारणाओं को जानकर इस संबंध को बेहतर तरीके से समझने का प्रयास करेंगे। हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि व्यक्ति समूहों की सामाजिक संरचना में कहाँ स्थान पाते हैं और वे किस तरह कार्य करते और सामाजिक प्रक्रियाओं को प्रारंभ करते हैं। वे किस प्रकार सहयोग, प्रतियोगिता और संघर्ष करते हैं? वे भिन्न प्रकार के समाज में सहयोग, प्रतियोगिता और संघर्ष को भिन्न प्रकार से क्यों करते हैं? समाजशास्त्र के मूल प्रश्नों के उपागम को आगे बढ़ाते हुए पहली पाठ्यपुस्तक में हमने इन प्रक्रियाओं को उनके स्वाभाविक और अपरिवर्तनीय रूप में नहीं देखा पर उन्हें सामाजिक रूप में बनते हुए देखा। हम प्रकृतिवादियों की इस व्याख्या को स्वीकार नहीं करते कि मानव स्वभाव से ही प्रतियोगी और संघर्ष प्रवृत्ति का होता है।

सामाजिक संरचना और सामाजिक प्रक्रियाओं की अवधारणा इस तथ्य की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती है कि समाज व्यवस्था और परिवर्तन दोनों से ही संचालित होता है। कुछ चीज़ें सदा समान रहती हैं। ग्रामीण एवं नगरीय समाजों में पाए जाने वाली व्यवस्था और परिवर्तन हमें निरंतरता और परिवर्तन को ठीक से समझने में सहायता देते हैं।

आगे हम समाज और पर्यावरण के मध्य इन आधारभूत संबंधों को देखेंगे और समकालीन विकासों को देखते हुए पर्यावरण की समाजशास्त्रीय समझ को आरेखित करेंगे।

प्रथम पाठ्यपुस्तक में हमने समाजशास्त्र के उद्भव और इसके द्वारा आधुनिकता को समझने के लिए किए जा रहे प्रयास को जाना। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में हम कतिपय मुख्य अवधारणाओं का परिचय देंगे, जिन्हें पाश्चात्य एवं भारतीय विचारकों ने आधुनिक समाजों की संरचना एवं प्रकार्यों को समझने के लिए विकसित किया है।

हमारा विचार यहाँ उनके सर्वांगीण विचारों को बताने का नहीं है, वैसे भी उसे हमारे समय और स्थान की सीमा में रख पाना संभव नहीं है। यहाँ हमारा केंद्रबिंदु उनके विचारों एवं कार्यों के कुछ पक्षों को बताना ही है। हम आशा करते हैं कि इससे हम इन विचारकों के कार्यों के महत्त्व से आपको परिचित करा पाएँगे। उदाहरण के लिए हम कार्ल मार्क्स द्वारा दिए गए वर्ग संघर्ष के सिद्धांत को जानेंगे। एमिल दुर्खाइम के श्रम विभाजन के विचारों को और मैक्स वेबर के नौकरशाही के विचारों को जानेंगे। इसी तरह हम भारतीय विचारक जी.एस. घूर्ये के प्रजाति एवं जाति संबंधी विचारों को, डी.पी. मुखर्जी के परंपरा और परिवर्तन के विचारों को और ए.आर. देसाई के राज्य संबंधी विचारों को और एम. एन. श्रीनिवास के ग्रामीण भारत संबंधी विचारों से परिचित होंगे।

समाजशास्त्र की प्रश्नात्मक प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए, यह पाठ्यपुस्तक भी पिछली पाठ्यपुस्तक की तरह पाठकों की लगातार सोचने, प्रतिबिंबित करने तथा समाज में और एक व्यक्ति के रूप में हमारे साथ क्या हो रहा है, से हमें संबद्ध करती है। इस पाठ्यपुस्तक में दिए गए क्रियाकलाप पाठ्यपुस्तक का एक आंतरिक हिस्सा है। पाठ्यसामग्री तथा क्रियाकलाप एक एकीकृत समग्र बनाते हैं। एक के बगैर दूसरा कार्य नहीं कर सकता। समाज के बारे में बनी बनाई जानकारी देने के बजाय यहाँ समाज को समझने में मदद करना ही इसका उद्देश्य है। तिथियाँ जो विचारकों के जीवन तथा कार्यों को दर्शाती हैं, उन्हें केवल विचारकों के ऐतिहासिक संदर्भों के एक वृहद बोध को दर्शाने के लिए शामिल की गई हैं। पाठ्यपुस्तक क्रियात्मक होने का प्रयास करती है तथा साथ ही विभिन्न क्रियाकलापों से परिचित कराती है, जिससे कि छात्रों को समाज को एक जीवन की तरह समझने में मदद मिल सके। यद्यपि, सर्वाधिक रोमांचक तथा नवप्रवर्तनीय हिस्सा कक्षा में शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के साथ ही संभव होता है। वे संभवतः और अधिक उदाहरण तथा क्रियाकलापों को जोड़ने में सक्षम होंगे। यहाँ यह विचार भी अंतःक्रियात्मक वाद-विवाद की शुरुआत करना है। यह केवल एक शुरुआत है। इसके साथ ही और बहुत सारी सीखने की प्रक्रियाएँ कक्षा में होंगी। विद्यार्थी एवं शिक्षक संभवतः और बेहतर तरीकों से क्रियाकलापों एवं उदाहरणों के बारे में सोच सकते हैं तथा पाठ्यपुस्तक को और बेहतर बनाने के बारे में सुझाव दे सकते हैं।

प्रो. मैत्रेयी चौधरी<br>
प्रो. मंजु भट्ट

# पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

**अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति**

हरि वासुदेवन, *प्रो.फ़ेसर,* इतिहास विभाग, कलकत्ता, विश्वविद्यालय, कोलकाता।

**मुख्य सलाहकार**

योगेंद्र सिंह, *प्रोफ़ेसर* (एमरिटस), सेंटर फॉर द सोशल सिस्टम, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली।

**सदस्य**

अंजन घोष, *फैलो,* सेंटर फॉर स्टडीज़ इन सोशल साइंसेज़, कोलकाता।

अमिता बाविस्कर, *प्रोफ़ेसर,* इंस्टीच्यूट ऑफ़ इकॉनोमिक ग्रोथ, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

आभा अवस्थी, *प्रोफ़ेसर* (सेवानिवृत्त), समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

जितेंद्र प्रसाद, *प्रोफ़ेसर* (सेवानिवृत्त), समाजशास्त्र विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक।

डी.के. शर्मा, *प्रोफ़ेसर* (सेवानिवृत्त), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली।

दिशा नवानी, *प्रवक्ता*, समाजशास्त्र विभाग, गार्गी महाविद्यालय, नयी दिल्ली।

बलाका डे, *कार्यक्रम सहायक*, यूनाइटेड नेशंस, डेवेलपमेंट प्रोग्राम, नयी दिल्ली।

मधु नागला, *प्रोफ़ेसर*, समाजशास्त्र विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक।

मधु शरन, *प्रोजेक्ट निर्देशक*, हेन्ड–इन–हैन्ड, चेन्नई।

मैत्रेयी चौधरी, *प्रोफ़ेसर,* सेंटर फॉर द स्टडीज़ ऑफ सोशल सिस्टम, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली।

राजीव गुप्ता, *प्रोफ़ेसर* (सेवानिवृत्त), समाजशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

विश्वरक्षा, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* समाजशास्त्र विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।

सारिका चन्द्रवंशी साजू, *असिस्टेन्ट प्रोफ़ेसर,* आर. आई. ई., भोपाल, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली।

सतीश देशपांडे, *प्रोफ़ेसर,* समाजशास्त्र विभाग, दिल्ली स्कूल ऑफ़ इकोनोमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

**हिंदी अनुवाद**

कंचन वर्मा, *पी.जी.टी.,* जी.डी. गोयनका विद्यालय, नयी दिल्ली।

**सदस्य समन्वयक**

मंजु भट्ट, *प्रोफ़ेसर* एवं अध्यक्ष सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली।

# आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में सहयोग देने हेतु करुणा चानना, *प्रोफ़ेसर* (अवकाश प्राप्त), ज़ाकिर हुसैन सेंटर फॉर एजुकेशनल स्टडीज़, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली; अरविंद चौहान, *प्रोफ़ेसर,* समाजशास्त्र विभाग, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल; देबल सिंह राय, *प्रोफ़ेसर,* समाजशास्त्र विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली; राजेश मिश्रा, *प्रोफ़ेसर,* समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ; एस.एम. पटनायक, *प्रवाचक,* मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; सुदर्शन गुप्ता, *प्रिंसिपल,* राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, पलोरा, जम्मू; मनदीप चौधरी, *पी.जी.टी.* (सेवानिवृत्त) (समाजशास्त्र), गुरु हरकिशन पब्लिक स्कूल, नयी दिल्ली; सीमा बनर्जी, *पी.जी.टी.* (समाजशास्त्र), लक्ष्मन पब्लिक स्कूल, नयी दिल्ली; रीता खन्ना, *पी.जी.टी.* (समाजशास्त्र), दिल्ली पब्लिक स्कूल, नयी दिल्ली; सुधा कालरा, *पी.जी.टी.* (सेवानिवृत्त) (समाजशास्त्र), राजकीय उच्च माध्यमिक कन्या विद्यालय, लक्ष्मीनगर, दिल्ली; ए. आमिर अंसारी, *पी.जी.टी.* (समाजशास्त्र), स्वतंत्र भारत मिल उच्च माध्यमिक विद्यालय, नयी दिल्ली एवं कंचन वर्मा, *पी.जी.टी.* (हिंदी), जी.डी. गोयनका विद्यालय, नयी दिल्ली का आभार व्यक्त करती है। उपर्युक्त में से कुछ सदस्यों ने पुस्तक के पुनरावलोकन में भी अपना सहयोग दिया हम उनके भी आभारी हैं।

परिषद् सविता सिन्हा, *प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष* (सेवानिवृत्त), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग का भी उनके सहयोग के लिए आभार व्यक्त करती है।

परिषद् सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नयी दिल्ली; वी. सुरेश, *पी.जी.टी.* (जूलोजी), श्रीविद्या मैट्रिकुलेशन हायर सेकंडरी स्कूल, उतंगरी, तमिलनाडु; एल. चक्रवर्ती, *छायाचित्रकार,* उतंगरी, तमिलनाडु का उनके चित्रों को इस पाठ्यपुस्तक में प्रयोग करने के लिए उनका आभार व्यक्त करती है। इस पाठ्यपुस्तक में दिए गए चित्रों में से कुछ चित्र हमें आर.सी. दास, *छायाचित्रकार,* सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली द्वारा प्राप्त हुए इसके लिए परिषद् उनकी आभारी है। कुछ एक चित्र हमने विभिन्न पत्रिकाओं से प्राप्त किए, वे हैं—बिज़निस वर्ल्ड,

बिज़निस टुडे और बिज़निस एंड इकोनोमी, इसके लिए परिषद् कापीराइट धारकों तथा प्रकाशकों के प्रति अपना आभार एवं धन्यवाद व्यक्त करती है।

इस पुस्तक के चरणबद्ध विकास के लिए परिषद् *डी.टी.पी. आपरेटर* गिरीश गोयल एवं अनिल शर्मा; *कॉपी एडीटर* सुप्रिया गुप्ता एवं यतेन्द्र कुमार यादव तथा *प्रूफ रीडर* अनिल शर्मा की आभारी है। परिषद् *कंप्यूटर स्टेशन प्रभारी* दिनेश कुमार के प्रति भी आभार व्यक्त करती है। हम प्रकाशन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. का भी उनके सहयोग के लिए आभार व्यक्त करते हैं।

प्रो. मैत्रेयी चौधरी
प्रो. मंजु भट्ट

# विषय-सूची

**आमुख** *iii*

**शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए दो शब्द** *v*

1. समाज में सामाजिक संरचना, स्तरीकरण और सामाजिक प्रक्रियाएँ 1
2. ग्रामीण तथा नगरीय समाज में सामाजिक परिवर्तन तथा सामाजिक व्यवस्था 24
3. पर्यावरण और समाज 53
4. पाश्चात्य समाजशास्त्री—एक परिचय 71
5. भारतीय समाजशास्त्री 90

# भारत का संविधान

## उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता और अखंडता]** सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतदद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।